VOL- VIII ISSUE- VIII AUGUST 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

संवेदना की भाव भूमि पर डॉ. अखिलेश पालरिया की कहानियां

शोधार्थी :
कीर्ति शर्मा,
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

संवेदना साहित्य की प्रत्येक विधा का मूल स्रोत होती है। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि संवेदना ही साहित्य की आत्मा होती है। कहानी में भी संवेदना की वही भूमिका होती है। संवेदना के बगैर कहानी की कल्पना करना ही कठिन होता है। कहानीकार का यही गुण उसे कहानीकार बनाता है कि वह प्रत्येक स्थिति और घटना को, प्रत्यक्ष यथार्थ को सीधे-सीधे ग्रहण करने की बजाय मन, बुद्धि और सम्पूर्ण भावनात्मक सत्ता के साथ महसूस करता है। दृष्टा के सामने जीवन का जो यथार्थ प्रस्तुत होता है, उसे कहानकार अपनी अंतरचेतना के भीतर जीवन दृष्टि, अनुभव, सौंदर्यबोध एवं नैतिक बोध आदि के प्रकाश में विश्लेषित-विवेचित करता है। कहानीकार की संवेदना में कहानी रचने की क्षमता होती है और वह सम्प्रेषणीयता की शक्ति से भी परिपूर्ण होती है। इसी के कारण कहानी में रोचकता के साथ उसमें शब्द शक्ति को बल मिलता है और वह पाठक को अपने मोहपाश में बांध लेती है।

सृजन में संवेदना के महत्व की चर्चा करते हुए कथाकार-उपन्यासकार भीष्म साहनी लिखते हैं-

"रचना, लेखक की कलम नहीं करती, उसका मस्तिष्क नहीं करता, उसका भाव-विह्वल हृदय करता है।ÓÓ1

कहानी में संवेदना की सार्थकता ही यही होती है कि वह पाठकों में कहीं संवेदना का संचार करती है तो कहीं विस्तार करती है। हमारे अस्तित्व में कभी एक भी क्षण ऐसा नहीं आता, जब हमारा मन और बुद्धि किसी न किसी संवेदन की गिरफ्त में नहीं आता। ऐसे में कहानीकार जीवन की चुनी हुई घटनाओं को लेकर भाषिक संरचना से ऐसी अभिनव कहानियां रचता है कि पाठक का मन संवेदित हो उठता है। यही कारण है कि संवेदनाओं से ओत-प्रोत कहानियां ही पाठकों के हृदय को लुभाती हैं।

अजमेर निवासी सुप्रसिद्ध कहानीकार डॉ. अखिलेश पालरिया भी एक ऐसे ही कहानीकार हैं, जिन्होंने संवेदनाओं की भाव भूमि पर अपनी कहानियों की रचना करके पाठकों का हृदय जीता है। एकदम साफ-सुथरी भाषा और शिल्प के साथ संवेदनाओं की उमड़ती-घुमड़ती घटनाएं डॉ. पालरिया की कहानियों की जान हंै। वे कहानी के पात्रों को भी इतने संवेदनशील बनाते हैं, कि पाठक की सहानुभूमि स्वत: ही उनके साथ जुड़ जाती है।

डॉ. अखिलेश पालरिया एक सीधे-सरल और सच्चे मन के कहानीकार हैं। यही सीधापन, सरलता और सच्चाई उनकी कहानियों में प्रकट होती है और जहां ये तीनों होते हैं, वहां संवेदना स्वत:स्फूर्त जागृत होने लगती है। यही वजह है कि डॉ. पालरिया की कहानियां पढ़ते हुए कभी मन में संवेगों का भयंकर तूफान उठने लगता है तो कभी भावनाओं, संवेदनाओं के बादल उमड़-घुमड़कर आते हैं और नयनों के कोर भिगो जाते हैं। कई बार तो पाठक नयनों के इस मेघ मल्हार के साथ देर तक एकांत में दर्द भरे गीत गाता रहता है। अपनी कहानियों में डॉ. पालरिया किस वर्ग, किस समुदाय, किस समाज की बात नहीं उठाते। वे जिस चिकित्सकीय सेवा में रहे, उस सेवा मेंे जाति, धर्म और रंग-भेद से ऊपर उठकर केवल मानवता की सेवा का पाठ पढ़ाया जाता रहा है। ऐसे में उनकी कहानियों में ऐसे पात्र और ऐसे कथानक मिल ही जाते हैं। परंतु उन पात्रों को इतना संजीदगी के साथ इतने चरित्रवान और उच्च विचार वाले बनाने की क्षमता निसंदेह डॉ. पालरिया में ही है और उनमें इस शक्ति के संचार का मुख्य स्रोत है उनका संवेदनशील मन। वे दुनिया में केवल और केवल अपने मन की ही सुनते हैं। उनका संवेदनशील मन ही उनका गुरु है, मन ही उनकी दुनिया है और अपने मन के सिवा वे कहीं और जाने की सोच भी नहीं सकते। यही स्थिति उनकी कहानियों की है। जैसा संवेदनशील मन है, वैसी ही संवेदनशील और पाठकों के हृदय में बस जाने वाली संवेदनाओं से ओतप्रोत कहानियां वे रचते हैं।

संवेदनाओं का दायरा जीव-जगत में सबके लिए बराबर होता है। यहां तक कि पशु-पक्षियों के साथ पेड़-पौधों तक की संवेदना को महसूस किया जा सकता है। जब व्यक्ति इन सबके साथ निर्जीव वस्तुओं में भी संवेदना महसूस करने लगता है तो सही

मायने में वह सामान्य मनुष्य से ऊपर उठने की ओर अग्रसर हो जाता है। सच भी यह है कि अगर मानव मन में संवेदनाएं न हों तो फिर वह मानव कहलाने के योग्य ही कहां रहता है। डॉ. पालरिया स्वयं एक जगह लिखते हैं-

"यह सत्य है, जहां संवेदनाएं व्यक्ति के सोचने-समझने का दायरा विस्तुत करती हैं, वहीं वे व्यक्ति को पर दुखी कातर बनाती हैं। वह इन्हीं संवेदनाओं की गहन अनुभूति के कारण सबसे जुड़ाव-लगाव महसूस करता है। व्यक्ति को व्यक्ति या प्रकृति अथवा पशु-पक्षी सबसे जोडऩे का काम संवेदनाएं करती हैं।ÓÓ2

चिकित्सक होने के नाते बीमार के प्रति डॉ. पालरिया की संवेदनाएं एक अलग स्थान रखती हैं लेकिन जब यही संवेदना कहानी का रूप लेती हैं तो वह अद्भुत रूप धारण कर लेती है। बीमारी का क्या भरोसा है, वह कब किसके साथ लग जाए। ऐसे में बीमार को बहुत सहानुभूति और अपनेपन की आवश्यकता होती है लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे समाज की मानसिकता अभी इतनी विकसित नहीं हो पाई है। बीमार, विशेष रूप से अगर वह लड़की हो तो उसको लेकर हमारा व्यवहार एकदम ही गैरजिम्मेदाराना हो जाता है जबकि जरूरत हमें अपनी जिम्मेदारी को और अधिक गहराई से समझने की होती है।

एक बीमार लड़की को जब शादी के तुरंत बाद ही उसके ससुराल वाले त्याग देते हैं तो कहानीकार डॉ. अखिलेश पालरिया का संवेदनशील मन बहुत आहत होता है। उनकी यह संवेदना एक कहानी में प्रकट होती है। एक जीती-जागती और पाठक के मन को छूती इस कहानी 'तुम बिन घर सूनाÓ में डॉ. पालरिया की कहानी की संवेदना ने हिंदी साहित्य की चुनिंदा उच्चतर कहानियों में व्याप्त संवेदना के स्तर को छूने का प्रयास किया है। कहानी में जब नायिका मनोरमा को उसके ससुराल वाले वापस भेज देते हैं तो अपने परिवार में वह कहती है-

"जब तक जिंदा हूं, आप लोगों के सान्निध्य में मेरी सांसें इस घर में मुस्कान बिखेरती रहेंगी। यद्यपि विवेक ने पत्नी के रूप में स्वीकार करके मुझसे फेरे लिए...वह एक अच्छा इंसान हो सकता है, लेकिन समाज में रहकर आदमी सब कुछ अपनी मर्जी से नहीं कर सकता। मुझे विवेक से कोई शिकायत भी नहीं। यदि वह तलाक चाहे तो मैं खुशी-खुशी अपने हस्ताक्षर कर दूंगी...अपने दिल के विकार को ठीक करने का सामथ्र्य तो मुझमें नहीं है, लेकिन दिल की बुरी नहीं हूं मैं।ÓÓ 3

देश के विकास के लिए अनेकानेक योजनाएं बनाई जाती हैं और उन्हें लागू करके उनकी क्रियान्विति का भार सरकारी कर्मचारियों को सौंपा जाता है। परंतु इनके लिए कर्मचारियों को जो लक्ष्य दिए जाते हैं, उनसे उनकी पदोन्नति को जोड़कर जिस तरह का व्यवहार किया जाता है, वह बेहद चिंतनीय है। इस प्रकार निरंतर बढ़ते दबाव में काम कर रहे कर्मचारी किस तरह से अपने लक्ष्य पूरे करते हैं, किस तरह की जोड़तोड़ करते हैं और किस प्रकार के हथकंडे अपनाते हैं, इस बात की ओर भी कहानीकार डॉ. अखिलेश पालरिया ने अपनी कुछ कहानियों में संकेत किया है। चूंकि डॉ. पालरिया पेशे से चिकित्सक हैं और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं को बेहतर तरीके से समझते हैं, ऐसे में वे वहां की विसंगतियों को अपनी कहानियों में उठाते हैं और उनके बेहतर निर्वहन का रास्ता भी सुझाते हैं।

विभागीय दबाव के बीच पारिवारिक जिम्मेदारियों से दबा एक साधारण कर्मचारी कैसे काम करता है, इस बात को अमूमन अफसर लोग समझते नहीं हैं। बढ़ती महंगाई और सीमित तनख्वाह में ईमानदार कर्मचारी का घर खर्च कैसे चल सकता है। उस पर भी जब वह विभाग की ओर से दिए गए लक्ष्य पूरे न कर पाए और उसका वेतन रोकने की नौबत आ जाए तो उसकी हालत क्या होगी, इसका व्यक्ति सहज ही अनुमान लगा सकता है। बहुद्देश्यीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता की एक छोटी-सी नौकरी करने वाले रोशनलाल की कहानी कहते हुए डॉ.अखिलेश पालरिया के मन की संवेदनाएं उनकी कहानी 'दिशाहीन लक्ष्यÓ में पलकों को भिगो जाती हैं। कहानी में वे लिखते हैं-

"नसबंदी, नसबंदी, नसबंदी-ये शब्द रोशन लाल के मस्तिष्क पर हथौड़े की भांति मार करते थे। लक्ष्य प्राप्ति का भूत भूख से अधिक हावी हो गया था। निरक्षर ग्रामीण परिवार नियोजन के महत्व को राष्ट्रीय दायित्व एवं निजी कल्याण से न जोड़कर कार्यकर्ताओं के स्वार्थ से प्रेरित मानते थे। अत: बदले में मोटी-मोटी अपेक्षाएं उनके लिए सामान्य बात थी। इस कार्यक्रम का मुख्य प्रयोजन जन्मदर को घटाने के स्थान पर मात्र लक्ष्य प्राप्ति रह गया था क्योंकि लक्ष्य पूर्ण करने की होड़ में विभिन्न विभागों के कर्मचारी संतोनोत्पति में असक्षम व्यक्तियों को शल्य क्रिया के लिए प्रेरित करने लगे।ÓÓ 4

शिक्षण संस्थाओं में होने वाला भेदभाव कोई नई बात नहीं है। मेडिकल कॉलेज तक में प्राचार्य पुत्र के साथ विशेष रियायत बरतना अब आम हो चुका है लेकिन इस भेदभाव के चलते किसी विद्यार्थी को जानबूझकर पीछे कर देने की प्रवृत्ति उस विद्यार्थी के भविष्य को अंधकारमय भी बना सकती है। महाविद्यालय में साथ

पढ़ रहे विद्यार्थियों के प्रेम और दोस्ती में उपजने वाली संवेदना को भी डॉ. पालरिया ने अपनी कई कहानियां में उकेरा है। महाविद्यालयी जीवन की दोस्ती न जाति को मानती है और न धर्म को। उनका तो एक मात्र धर्म होता है दोस्त की पीड़ा को दूर करना। डॉ. पालरिया की कहानी 'ऐसी थी वहÓ कुछ इसी तरह की भावनाओं का दस्तावेज है। कहानी में मुस्लिम नायिका की संवेदनाएं एक हिंदू नायक के प्रति उस समय बहुत गहराई से प्रकट होती हैं, जब कथानायक की वह मुस्लिम सहपाठी लड़की धर्म के बंधनों को तोड़ते हुए उसके साथ मंदिर जाती है। धर्म को लेकर उसके विचार बहुत स्पष्ट हैं और मानवधर्म से बढ़कर किसी धर्म को तरजीह नहीं देती हैं। कहानी में इसी संवेदना को प्रकट करते हुए डॉ. पालरिया बहुत ही सादगीपूर्ण शब्दावली का उपयोग करते हुए इस भाव को प्रकट करते हैं-

"तुमने कहा था-मैं अपने देश से बहुत प्यार करती हूं। पागल हैं वे लोग, जो धर्म, सम्प्रदाय और भाषा को लेकर देश को नुकसान पहुंचा रहे हैं और राष्ट्रीय एकता में बाधक बने हुए हैं। एक क्षण रुककर तुम फिर बोली थी-मेरा धर्म है भारत, और राष्ट्रीयता है मेरी जाति।ÓÓ 5

कहानी में वही लड़की जब नायक से विवाह करके साम्प्रदायिकता की शिकार होती है और अपने बच्चे को बचाने के लिए हमलावरों की गोली का शिकार हो जाती है तो नायक की गोद में अबोध बच्चे को देकर वह इस नश्वर संसार से विदा हो जाती है। यहां एक मुस्लिम लड़की की अपने देश और परिवार दोनों के प्रति जो संवेदना प्रकट होती है, वह अद्वितीय है। बहुत गहरी है। ऐसी ही कहानियों की आज हिंदी साहित्य में बहुत जरूरत महसूस की जा रही है। यही वे कहानियां हैं, जो हिंदी साहित्य को भंडार को सदैव भरा हुआ रखेंगी। कभी भी इस भंडार को रीतने नहीं देंगी। अपनी संवेदनाओं और भावपूर्ण कथ्य के बल पर इस बगिया को सदैव महकाए रखेंगी।

सच तो यह है कि डॉ. पालरिया की संवेदनशीलता ही उनकी कहानियों में उतरती है। जरा सी बात पर उनकी संवेदनाएं जागृत हो जाती हैं। वे किसी एक घटना पर कई तरह से सोचने लगते हैं और दिलचस्प बात यह है कि वे बुरी से बुरी घटना के बाद भी उसका अंत अच्छी घटना के रूप में लाने के लिए तड़प उठते हैं। यही सकारात्मकता उनकी कहानी को हिंदी साहित्य के कहानीकारों से अलग मुकाम पर ले जाती है। उनकी कहानी की संवेदना जहां पात्रों के साथ न्याय करते हुए उन्हें आदर्श स्थिति के साथ प्रस्तुत होने को मजबूर करती है, वहीं पाठकों को अपने साथ जोड़ते हुए उनकी रुचि और लगाव को भी टूटने नहीं देते। यही उनकी कहानी की सबसे बड़ी सफलता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. भीष्म साहनी, आज के अतीत, पृष्ठ-228
2. डॉ. अखिलेश पालरिया, आखिर मन ही तो है, परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई, संस्करण 2015, पृष्ठ-11
3. डॉ. अखिलेश पालरिया, कहानी तुम बिन घर सूना, पुजारिन एवं अन्य कहानियां, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, संस्करण-2019, पृष्ठ- 32-33
4. डॉ. अखिलेश पालरिया, कहानी दिशाहीन लक्ष्य, चाहत के रंग, मीनाक्षी प्रकाशन, अजमेर, संस्करण-1998, पृष्ठ-37
5. डॉ. अखिलेश पालरिया, कहानी ऐसी थी वह,मन के रिश्ते, पल्लव प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1986, पृष्ठ-52